एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अजौला: पशुओं के लिए उतम पौष्टिक आहार

(*रविन्द्र कुमार)
सहायक बीज प्रमाणीकरण अधिकारी, राजस्थान राज्य बीज एवं जैविक प्रमाणीकरण संस्था, बांसवाड़ा
* ramanlal940@gmail.com

भारत देश में किसान अपनी आय को दुगुनी करने के लिए खेती के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय को भी अपनाता है। पशुपालन व्यवसाय से अधिक आमदनी प्राप्त हो इसके लिए किसान को पशुओं के खानपान पर विशेष घ्यान रखनें की आवश्यकता होती है। पशुओं से अधिक दुग्ध उत्पादन एवं अधिक आय प्राप्त करनें के लिए हरे चारे का उपयोग दैनिक आहार के रूप में करना अति आवश्यक होता है। अजौला का उपयोग दुधारू पशुओं के साथ–साथ खरगोश, मुर्गी, तथा मछली के लिए एक पौष्टिक आहार होता है। यह एक नई तकनीक है जिसके माध्यम से पशुओं में विटामिन, प्रोटीन, तथा अमीनों अम्ल की पुर्ति की जाती है। अजौला उत्पादन को बड़े पैमाने पर विकसित करने के लिए भारत एवं राजस्थान सरकार के कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र आदि संस्थानों पर समय–समय पर व्यवसायिक प्रशिक्षण आयोजित किए जाते है। सामान्य रूप से देखा जाए तो अजौला, शैवाल के समान एक जलीय फर्न होती है। इसे पशुओं को या तो सीधे रूप में या फिर सुखे चारें में मिलाकर खिलाया जा सकता है।

अजौला क्या है

अजौला एक जलीय फर्न होती है जिसमें पशुओं के लिए आवश्यक विटामिन, प्रोटीन, तथा अमीनों अम्ल पाए जाते है। अजौला में सामान्यत 30–35 प्रतिशत प्रोटीन, 10–15 प्रतिशत खनिज लवण, 10 प्रतिशत अमीनों अम्ल, आवश्यक विटामिन, एवं फास्फोरस, पौटेशियम, कॉपर, मैग्निशियम आदि तत्व पाए जाते है।

अजौला उत्पादन विधि

किसान को अजौला का उत्पादन शुरू करने से पहले स्थान का चुनाव करना आवश्यक होता है। स्थान का चुनाव करते समय किसान को यह घ्यान रखना आवश्यक होता है कि स्थान छायायुक्त हो तथा साथ ही जमीन में खरपतवार नही हो। स्थान का चुनाव करने के बाद किसान को 10 फीट लम्बी, 3 फीट चौड़ी, एवं 1 फीट गहरी क्यारी बना लेंवे। क्यारी बनानें के बाद इसमें 120 गेज की सिलपुलिन शीट को बिछा देंवे तथा इसके बाद 500 लीटर पानी की मात्रा को क्यारी में भर देंवे। 100 किलो मिट्टी एवं 10 किलो 5 दिन पुरानी गोबर की खाद का मिश्रण तैयार करके इस क्यारी में डाल देंवे। इसके बाद 2 किलो अजौला को मिट्टी व गोबर की खाद से मिश्रित पानी में डाल देवें। अजौला उत्पादन इकाई लगानें के 21 वें दिन से 2 किलो अजौला रोज प्राप्त की जा सकती है।

अजौला का पशुओं में उपयोग के फायदे

1. अजौला का उपयोग पशुओं में करनें पर दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है।
2. पशुओं में इसका उपयोग दाना मिश्रण के साथ 2 किलो के हिसाब से किया जाता है जिससे पशु की दुग्घ उत्पादन क्षमता में 15 प्रतिशत की वृद्धि होती है।
3. मुर्गियों में अजौला का उपयोग प्रतिदिन 20 ग्राम के रूप में किया जाता है जिससें इनकी अण्डा उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।
4. बकरी एवं भेड़ में अजौला का उपयोग 250 ग्राम प्रतिदिन के रूप में किया जाता है जिससें इनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।